

1- स्वर सन्धि (अच् सन्धि) = स्वर का मेल स्वर से होने पर परिवर्तन स्वर में होता है तो स्वर संधि होती है।

जैसे - देव + आलयः = देवालयः (यहाँ 'अ' तथा 'आ' दोनों स्वरों में सन्धि होकर 'आ' हो गया)

2- व्यञ्जन सन्धि (हल् सन्धि) = यदि व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन का अथवा व्यञ्जन के साथ स्वर का मेल हो और परिवर्तन व्यञ्जन में हो, तो व्यञ्जन सन्धि होती है।

(क) व्यञ्जन का व्यञ्जन के साथ मेल -

जगत् + नाथः = जगन्नाथः।

कस् + चित् = कश्चित्।

(ख) व्यञ्जन का स्वर के साथ मेल -

वाक् + अस्ति = वागस्ति

जगत् + ईशः = जगदीशः



3- विसर्ग सन्धि = यदि विसर्ग का मेल स्वर अथवा व्यञ्जन के साथ हो और परिवर्तन

विसर्ग में हो तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

विसर्ग के साथ स्वर का मेल - रामः + उवाच
= राम उवाच

स्वर सन्धि

स्वर संधि के निम्नलिखित भेद होते हैं -

स्वर संधि

↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
दीर्घ गुण वृद्धि यण् अयादि पूर्वरूप पररूप

① दीर्घ सन्धि (अकः सवर्णे दीर्घः)

17

इसमें अक प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के समान (सवर्ण) इसके पूर्व में पड़े गए प्रत्याहार से रहने पर उस अक का दीर्घ हो जाता है। अक प्रत्याहार (अ, इ, उ, ऋ, लृ) जब दो समान स्वर पास-पास आते हैं तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। अर्थात् जब (अ या आ के बाद अ या आ आये तो आ) अ, आ, इ, ई, उ, ऊ ऋ ऋ तथा लृ के बाद कोई समान स्वर आता है तो दोनों के स्थान पर दीर्घ हो जाता है।

उदाहरण - अ या आ के बाद अ या आ = आ /

राम + अवतार = रामावतारः

इसे चार प्रकार से समझ सकते हैं -

(i) अ, आ + अ, आ = आ

(ii) इ, ई + इ, ई = ई

(iii) उ, ऊ + उ, ऊ = ऊ

(iv) ऋ, ॠ + ऋ, ॠ = ॠ



(i) अ + अ = आ राम + अवतारः = रामावतारः

अ + आ = आ पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः

आ + अ = आ विद्या + अर्थो = विद्यार्थी

आ + आ = आ दया + आनन्दः = दयानन्द

पक्व + अन्नम् = पक्वानाम् (आ + आ = आ)

हिम + आलयः = हिमालयः (अ + आ = आ)

विद्या + आलयः = विद्यालयः (आ + आ = आ)

(ii) इ + इ = ई रवि + इन्द्रः = रवीन्द्र

इ + ई = ई हरि + ईशः = हरीशः

ई + इ = ई लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा

ई + ई = ई मही + ईशः = महीशः ¹⁸

प्रति + ईर्यते = प्रतीक्षते (इ + ई = ई)

नदी + ईशः = नरीशः (ई + ई = ई)

(iii) उ + उ = ऊ भानु + उदयः = भानूदयः

उ + ऊ = ऊ लघु + ऊष्मा = लघूष्मा

ऊ + उ = ऊ वधू + उत्सवः = वधूत्सवः

ऊ + ऊ = ऊ वधू + ऊहः = वधूहः

विधु + उदये = विधूदये (उ + उ = ऊ)

लघु + उर्मिः = लघूर्मिः (उ + ऊ = ऊ)

वधू + उपकार = वधूपकारः (ऊ + उ = ऊ)

भू + ऊष्मा = भूष्मा (ऊ + ऊ = ऊ)

(iv) ऋ + ऋ = ॠ होतृ + ऋकारः = होतृकारः

पितृ + ऋणम् = पितृणम्

2- गुण सन्धि = सूत्र - आद् गुणः

जब अ अथवा आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ तथा लृ आये तो उनके स्थान पर क्रमशः रु, ओ, अर् और अल् हो जाता है। अर्थात् इ के स्थान पर रु, उ के स्थान पर ओ, ऋ के स्थान पर अर् और लृ के स्थान पर अल् हो जाता है।

उदाहरण (i) अ या आ के बाद इ या ई = रु

अ + इ = रु उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः

अ + ई = रु नर + ईशः = नरेशः

आ + इ = रु मदा + इन्द्रः = मदेन्द्रः

आ + ई = रु रमा + ईशः = रमेशः

(ii) अ या आ के बाद उ या ऊ = ओ



अ + उ = ओ नर + उत्तमः = नरोत्तमः

अ + ऊ = ओ नव + ऊदाः = नवोदाः

आ + उ = ओ महा + उत्सवः = महोत्सवः

आ + ऊ = ओ गंगा + ऊर्मिः = गंगोर्मिः

(iii) अ या आ के बाद ऋ या ॠ = अर्

अ + ऋ = अर् सप्त + ऋषिः = सप्तर्षिः

आ + ऋ = अर् महा + ऋषिः = महर्षिः

अ + ॠ = अर् देव + ॠषिः = देवर्षिः

(iv) अ या आ के बाद लृ = अल्

अ + लृ = अल् तव = लृकारः = तवल्लकारः

3- वृद्धि सन्धि (सून- वृद्धिरेणि)

जब अ अथवा आ के बाद रु या रे, ओ या औ हो तौ दोनों के स्थान पर क्रमशः रे और औ हो जाता है।

(i) अ या आ के बाद रु या रे = रे

अ + रु = रे मम + रुकः = ममैकः

आ + रु = रे तदा + रुव = तदैवः

आ + रु = रे तप्ता + रुव = तपैव

(ii) अ या आ के बाद ओ या औ = औ

अ + ओ = औ जल + औघः = जलोघः

अ + औ = औ रुप + औदार्यम् = रुपौदार्यम्

आ + ओ = औ विद्या + औजः = विद्यौजः

आ + औ = औ विद्या + औत्सुक्यम् = विद्यौत्सुक्यम्

4- यण सन्धि (सूत्र - इकोयणानि)

इ, उ, ऋ, लृ को क्रमशः य्, व्, र्, ल् बनाने का नियम।

यदि इक (इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, लृ) के बाद असमान स्वर हो तो उनके स्थान पर यण् अर्थात् क्रमशः य् व् र् ल् हो जाता है।

इ, ई उ, ऊ ऋ, ॠ लृ
↓ ↓ ↓ ↓
य् व् र् ल्



य् | इ + अ = य्
यदि + अपि = यर्थापि सुधी + उपारयः = सुद्युपारयः
य यु

इति + रतत् = इथेतत्
ये

व् | उ + अ = व्
सद्यु + अस्ति = सद्वस्ति वधू + आशयः = वध्वाशयः
व वा

भानु + ओः = भान्वोः
वो ऋ आ

र | मानृ + अंशः = मान्रंशः पितृ + आदेशः = पित्रादेशः
र रा

पितृ + उपदेशः = पितृपदेशः
र र

लृ + आकारः = लाकारः लृ + अकारः = लकारः
ला ल

लृ + औष्ठः = लौष्ठः
लो

5- अध्यादि संधि (अयवायाव सन्धि)

सूत्र - रुचौडयवायावः

ये रु, ओ, ऐ, औ को अम्, अव्, आय् और आव् करने का नियम

यदि रु, ओ, ऐ और औ के बाद कोई भी (समान या असमान) स्वर हो तो क्रमशः रु का अम्, ओ का अव्, ऐ का आय्, औ का आव् हो जाता है।

जैसे-

रु	ओ	ऐ	औ
↓	↓	↓	↓
अम्	अव्	आय्	आव्



(i) अम् → रु के बाद असमान / समान स्वर के आने पर 'रु' का 'अम्' हो जाता है।

$$\frac{\text{ने + अनम्}}{\text{अम्}} = \text{नयनम्}$$

$$\frac{\text{चे + अनम्}}{\text{अम्}} = \text{चयनम्}$$

$$\frac{\text{शे + अनम्}}{\text{अम्}} = \text{शयनम्}$$

$$\frac{\text{ने + अति}}{\text{अम्}} = \text{नयति}$$

$$\frac{\text{हरे + रु}}{\text{अम्}} = \text{हरये}$$

$$\frac{\text{ऋष + रु}}{\text{अम्}} = \text{ऋषये}$$

(ii) अव् → औ के बाद असमान / समान स्वर आने पर 'औ' का 'अव्' हो जाता है।

$$\frac{\text{पो + अनम्}}{\text{अव्}} = \text{पवनम्}$$

$$\frac{\text{भौ + अनम्}}{\text{अव्}} = \text{भवनम्}$$

$$\frac{\text{गौ + इ}}{\text{अव्}} = \text{गवि}$$

$$\frac{\text{विष्णो + रु}}{\text{अव्}} = \text{विष्णवे}$$

$$\frac{\text{साधो + रु}}{\text{अव्}} = \text{साधवे}$$

$$\frac{\text{वधो + रु}}{\text{अव्}} = \text{वधवे}$$

(iii) आम् = ऐ के बाद असमान / समान स्वर आने पर 'ऐ' का 'आम्' हो जाता है।

$$\frac{\text{रै + ए}}{\text{आम्}} = \text{रायै} \quad \frac{\text{रै + औ}}{\text{आम्}} = \text{रायोः} \quad \frac{\text{गै + अकः}}{\text{आम्}} = \text{गायकः}$$

$$\frac{\text{ग्लै + अति}}{\text{आम्}} = \text{गलायति} \quad \frac{\text{गै + अति}}{\text{आम्}} = \text{गायति} \quad \frac{\text{नै + अकः}}{\text{आम्}} = \text{नायकः}$$

$$\frac{\text{शै + अते}}{\text{आम्}} = \text{शायते} \quad \frac{\text{शै + अकः}}{\text{आम्}} = \text{शायकः}$$

(iv) आव् = औ के बाद असमान / समान स्वर आने पर 'औ' का 'आव्' हो जाता है।

$$\frac{\text{भौ + इकः}}{\text{आव्}} = \text{भाविकः} \quad \frac{\text{पौ + अनः}}{\text{आव्}} = \text{पावनः} \quad \frac{\text{भौ + उकः}}{\text{आव्}} = \text{भावुकः}$$

$$\frac{\text{पौ + अकः}}{\text{आव्}} = \text{पावकः} \quad \frac{\text{भौ + अकः}}{\text{आव्}} = \text{भावकः} \quad \frac{\text{डौ + अपि}}{\text{आव्}} = \text{डावपि}$$

$$\frac{\text{नौ + इकः}}{\text{आव्}} = \text{नाविकः} \quad \frac{\text{गौ + औ}}{\text{आव्}} = \text{गावौ} \quad \frac{\text{नौ + ए}}{\text{आव्}} = \text{नावे}$$

$$\frac{\text{रौ + अनः}}{\text{आव्}} = \text{रावणः} \quad ('न' का 'ण')$$

$$\frac{\text{तौ + अवदताम्}}{\text{आव्}} = \text{ताववदताम्}$$

$$\frac{\text{तौ + ऊचतुः}}{\text{आव्}} = \text{तावूचतुः}$$



⇒ पूर्वरूप और पररूप संचि का उल्लेख पाठ्यक्रम में नहीं है।

व्यञ्जन सन्धि (हल सन्धि)

23

किसी व्यञ्जन वर्ण के बाद कोई स्वर या व्यञ्जन वर्ण हो तो वहां व्यञ्जन सन्धि होती है।

जैसे = वाक् + ईशः = वागीशः (व्यञ्जन + स्वर)

सत् + चित् = सच्चित् (व्यञ्जन + व्यञ्जन)

① अनुस्वार सन्धि -

'म' को अनुस्वार
यदि शब्द के अन्त में 'म' आए और उसके बाद कोई भी व्यञ्जन आए, तो 'म' का अनुस्वार (ं) हो जाता है।

ग्रामम् + याति = ग्रामं याति	पत्रम् + लिख = पत्रं लिख
हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे	मधुरम् + हसति = मधुरं हसति
धर्मम् + चर = धर्मं चर	

② जश्त्व (जश्) सन्धि -

वर्गों में प्रथम अक्षरों का तृतीय वर्ण - यदि प्रथम पद के अन्त में स्थित

वर्गों के प्रथम अक्षर हो और उसके बाद कोई भी स्वर हो या किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवां वर्ण हो या म्, र्, ल्, व् में से कोई वर्ण हो तो वर्ग के प्रथम वर्ण का उसी वर्ग का तीसरा वर्ण बन जाता है।

क् का ग् - पृषक् + उच्यते = पृषगुच्यते	वाक् + ईशः = वागीशः
च का ज् - अन् + अन्तः = अजन्तः	अन् + आदिः = अजादिः
ट का ड् - षट् + आननः = षडाननः	षट् + दशनिम् = षड्दशनिम्
त् का द् - महत् + दुःखम् = महद्दुःखम्	सत् + आचारः = सदाचारः
प् का ब् - सुप् + अन्तः = सुबन्तः	अप् + जः = अजः

3- प्रथम वर्ण का पञ्चम वर्ण में परिवर्तन

24

(मरोडनु नासिकेडनु नासिको वा)

यदि वर्ण के पहले वर्ण के बाद किसी भी वर्ण का पञ्चम वर्ण (अनुनासिक व्यञ्जन) हो, तो प्रथम वर्ण का भी उसी वर्ण का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है।

षट् + नवतिः = षण्णवतिः षट् + नाम = षण्णाम्
सत् + नाम = सन्नाम सत् + नायिका = सन्नायिका
जगत् + नाथः = जगन्नाथ पट् + जगः = पज्जगः
षट् + मुखः = षण्मुखः वाक् + मय = वाङ्मय

4- षटुत्व सन्धि (छटुना छुः) = जब स् अथवा त वर्ण

के बाद ष तथा ट वर्ण

आये तो 'स्' का 'ष्' तथा त वर्ण (त थ द ध न) का ट वर्ण (ट ठ ड ढ ण) हो जाता है।

रामस् + टीकते = रामष्टीकते अर्थात् स् के स्थान पर छ हो गया।

तत् + टीका = तट्टीका

कृष्न् नः = कृष्ण

उद् + डीते = उड्डीते

5- श्चुत्व सन्धि (स्त्रीः श्चुना श्चुः) - यदि स वर्ण

अथवा त वर्ण

(त थ द ध न) के किसी वर्ण के पश्चात् श

या च वर्ण (च छ ज झ ञ) का कोई वर्ण

आये तो 'स्' के स्थान पर 'श' और 'त' वर्ण

के स्थान पर 'च' वर्ण का व्यञ्जन वर्ण हो

जाता है।

उत् + चारणम् = उच्चारणम्

देवस् + शीते = देवशीते

तत् + हजम् = तच्छजम्

शार्गिन + जम् = शार्गिज्जम्

सत् + जनः = सज्जनः

उद् + ज्वलः = उज्ज्वलः

तत्स + च = तत्सञ्च

तत् + च = तच्च

6-चत्वं सन्धि (खरित्र) → वर्ग के प्रथम, द्वितीय, तृतीया, चतुर्थ और ऊष्म (श, ष, स, ह)

के बाद यदि वर्ग का प्रथम वर्ण या द्वितीय वर्ण और श, ष, स हो तो उसी वर्ग का प्रथम अक्षर होता है।

सद् + कारः = सत्कारः

तद् + परः = तत्परः

उद् + साहः = उत्साहः

सद् + पुत्रः = सत्पुत्रः

उद् + पन्नः = उत्पन्नः

लभ् + स्मते = लप्स्यते



7- (अतो रोरप्लुतादप्लुते) → अ के बाद विसर्ग (:) या र का उ

हो जाता है, बाद में अ हो तो पुनः उ का गुण सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है और बाद में 'अ' का पूर्व रूप सन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।

गर्दभः + अपि = गर्दभौऽपि

कः + अपि = कोऽपि

कः + अयम् = कोऽयम्

सः + अधुना = सोऽधुना

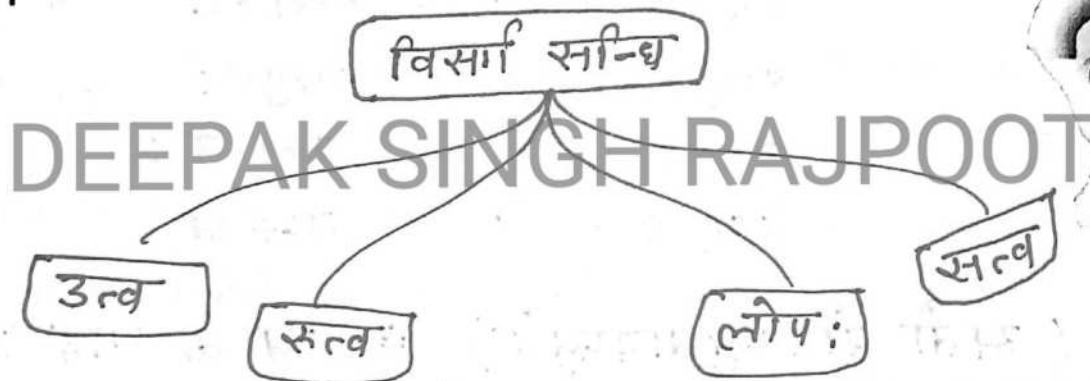
विसर्ग के बाद स्वर या व्यञ्जन वर्णों के आने पर विसर्ग (:) में जो विकार या परिवर्तन होता है। उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं।

जैसे → मनः + रथः = मनोरथः

विसर्ग हमेशा किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है। जैसे 'रामः' में 'अ' के बाद, हरि में 'इ' के बाद, गुरुः में 'उ' के बाद विसर्ग आया है।

विसर्ग सन्धि में विसर्ग से पहले स्वर तथा विसर्ग के बाद आने वाले स्वर और व्यञ्जन दोनों का ही ध्यान रखा जाता है।

विसर्ग सन्धि के निम्नलिखित भेद होते हैं -



1- उत्त्व → विसर्ग को 'उ' करने का नियम -

यदि विसर्ग से पहले 'अ' हो और उसके बाद 'अ' अथवा किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवां अक्षर या य्, र्, ल्, व् हो तो विसर्ग का उ हो जाता है तथा प्रथम 'अ' और 'उ' मिलकर 'ओ' हो जाते हैं।

जैसे - अ + : + अ = अ + उ + अ = ओ + अ = ओअ

प्रथमः + अध्यायः = प्रथमोऽध्यायः

मनः + हरः = मनोहरः

यशः + गानम् = यशोगानम्

सः + अपि = सोऽपि

कः + अवदत् = कौऽवदत्

अर्जुनः + जयति = अर्जुनोजयति

2- रुत्व - विसर्ग को 'र' करने का नियम-

यदि अ, आ के अतिरिक्त किसी भी अन्य स्वर के बाद विसर्ग हो और उसके बाद कोई स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण हो, तो विसर्ग का 'र' हो जाता है।

निः + बल = निर्बलः

मुनि + अयम् = मुनिरयम्

पितुः + इच्छा = पितुरिच्छा

कविः + इच्छति = कविरिच्छति

शिशुः + हसति = शिशुर्हसति



3- लोप - विसर्ग के लोप का नियम

- ① यदि सः और णः के बाद 'अ' को छोड़कर कोई अन्य स्वर अथवा व्यञ्जन हो।
- ② विसर्ग के पहले 'अ' हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई भी स्वर हो।
- ③ विसर्ग के पहले 'आ' हो और उसके बाद कोई भी स्वर हो या वर्गों का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ अक्षर हो या य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई अन्य वर्ण हो तो

सः + रन्ति = सरन्ति
अतः + स्व = अतस्व
वाताः + वान्ति = वातावान्ति
शिष्या + स्ते = शिष्यास्ते
देवाः + जयन्ति = देवाजयन्ति

रुधः + याति = रुधयाति
बालः + आगतः = बाल
आगतः
देवाः + इह = देवाइह
अर्जुनः + उवान्न =
अर्जुन उवान्न

4- सत्त्व - विसर्ग को श्, ष्, स् करने का नियम-

यदि विसर्ग के बाद च्, छ् हो, तो विसर्ग को 'श्'
यदि ट्, ठ् हो, तो विसर्ग को 'ष्' और यदि क्,
त्, थ् हो तो विसर्ग को 'स्' हो जाता है।

कः + चौरः = कश्चौरः

रामः + ठक्कुरः = रामठक्कुरः

नमः + तुभ्यम् = नमस्तुभ्यम्

कः + चित्रः = कश्चित्रः

नमः + कारः = नमस्कारः

रामः + टीकते = रामट्टीकते



DEEPAK SINGH RAJPOOT

समास के उद्देश्य

- ① नवीन शब्द निर्माण की क्षमता उत्पन्न करना।
- ② नव निर्मित शब्दों की शुद्धता- अशुद्धता का ज्ञान रखते हुए उसका सही वाक्य प्रयोग करना।
- ③ पद-विग्रह के माध्यम से पदों के शुद्ध उच्चारण कर सकने की क्षमता का विकास करना।
- ④ हाज़ों को प्रमुख समासों का ज्ञान तथा उनके प्रयोग से शुद्ध नवीन शब्दों के निर्माण की क्षमता का विकास करना।

समास शब्द की व्युत्पत्ति

- ⇒ समास शब्द सम् उपसर्ग, अस् धातु घञ् प्रत्यय से मिलकर बना है।
- ⇒ इसका अर्थ है दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एक शब्द बनाना।
- ⇒ समास का प्रयोग गद्य और पद्य दोनों में होता है।

समास का विग्रह → समास होने के बाद सभी शब्दों को यदि विभक्ति के साथ अलग-2

पुनः लिख दिया जाए, तो उसे विग्रह या समास-विग्रह कहा जाता है।

उदाहरणार्थ → राजपुत्रः (समासयुक्त)

राजः पुत्रः (समास-विग्रह)

नोट → समास - दो या दो से अधिक शब्दों के बीच में होता है। जैसे - रामः च कृष्ण

सन्धि → दो या दो से अधिक शब्दों के अन्तिम और प्रथम वर्णों के बीच में होती है।
च - रामकृष्णों।

समास विग्रह → समास विग्रह दो प्रकार का होता है। 30

- ① लौकिक विग्रह ② अलौकिक विग्रह

समास के भेद

समास के प्रमुख रूप से 6 भेद हैं -

- ① अव्ययीभाव समास
- ② तत्पुरुष समास
- ③ कर्मधारय समास
- ④ द्विगु समास
- ⑤ द्वन्द्व समास
- ⑥ बहुव्रीहि समास

माध्यमिक शिक्षा परिषद की पुस्तक में समास के 6 भेद बताए गए हैं।

(कर्मधारय, द्विगु, नञ् समास तत्पुरुष के ही भेद हैं।)

① अव्ययीभाव समास

जो शब्द समास होने के पूर्व तो अव्यय न हो, किन्तु समास होने पर 'अव्यय' हो जाए, वही अव्ययीभाव समास है।

इसमें पहला पद अव्यय या उपसर्ग होता है और यही प्रधान होता है। दूसरा पद संज्ञा शब्द होता है। इसका विग्रह उस अव्यय या उपसर्ग के स्वयं अर्थ के अनुसार किया जाता है। समस्त पद नपुंसकलिंग एकवचन में होता है। इसके रूप नहीं चलते हैं। यह विभिन्न अर्थों के लिए प्रयोग किया जाता है।

अव्ययीभाव समास करने वाला सूत्र

" अव्ययं विभक्ति - समीप - समृद्धि, व्युद्धि, अष्यभाव,
अत्यय, असम्प्रति, शब्दप्रादुर्भाव, पश्चात् - यथा - आनुपूर्व्य
- योगपद्य - सादृश्य - सम्पत्ति - साकल्य - अन्तवचनेषु "